

विचार बिन्दु

जो वस्तु आनंद प्रदान नहीं कर सकती, वह सुन्दर हो ही नहीं सकती। -प्रेमचंद

क्या कम वोटिंग का अर्थ लोकतंत्र में विश्वास की कमी है?

प्रश्न गम्भीर है और इसका उत्तर जटिल। साधारणतः यह कहा जा सकता है कि कम वोटिंग के अनेक कारण हैं। चुनावों में मतदान की प्रक्रिया को उसके पेटर्न को समझना भी एक कला है। मतदान संवैधानिक अधिकार है। यह आवाज प्रारम्भ ही से सुनी जा रही है कि मतदान करना अनिवार्य क्यों चाहिये। सन 1951-52 से प्रारम्भ होने वाले चुनावों से लेकर अभी तक यह स्पष्ट रूप से समझा जा रहा है कि चुनावों में समय ज्यदा भागीदारी गरीबों की, साधारण व्यक्तियों की है, बड़े लोग, बड़े अधिकारी मतदान में भाग बहुत कम लेते हैं।

वर्तमान चुनाव में यह नारा बहुत प्रचलित है, अबकी बार मोदी सरकार, अबकी बार 400 पार। मोदी के विरोध में विपक्ष एकजुट होने का प्रयत्न कर रहा है, किन्तु सफलता उसकी पहुँच से दूर है। विपक्षी संगठन को INDIA नाम दिया गया है। वस्तुतः पूरा नाम बहुत बड़ा है, किन्तु INDIA का सही अर्थ क्या है किसी ने समझा नहीं है। हमारे देश का नाम भारत है। जैनियों के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र के नाम भारत पर देश को भारत नाम दिया गया। वेदों में ऋषभदेव के नाम का वर्णन है। अंग्रेजों ने भारत को अपना एक उपनिवेश बनाया और इसे INDIA नाम दिया। ऑक्सफोर्ड के शब्दकोष में INDIA के नाम का अर्थ है, वह जनजाति (ट्राइब) जो अशिक्षित है, लूटपाट में लिप्त है।

चुनावों में भाग लेने वाले लोग कई श्रेणियों में वर्गीकृत किये जा सकते हैं। प्रथम चुनाव के समय सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस थी। विपक्ष कई दलों में बंटा हुआ रहा है। वर्तमान में संसद की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) है। भाजपा का राज है। कांग्रेस विपक्ष की बड़ी पार्टी है। यह कहा जा रहा है कि भारत की संसद में कभी 400 सांसद कांग्रेस के थे; किन्तु आज 300 सांसद चुनावों में खड़े होने वाले उम्मीदवार भी उसे नहीं मिल रहे हैं, जिन पर वह विश्वास कर सके।

गठबंधन के लोग ही आपस में लड़ रहे हैं। लोकसभा चुनाव 2024 सात चरणों में हो रहे हैं। प्रथम चरण के चुनाव 19 अप्रैल 2024 को हो चुके हैं। अन्तिम चरण 7 के चुनाव 01 जून 2024 को होंगे। पहले चरण के 102 सांसदों के क्षेत्र के चुनावों में मतदान हो चुका है।

भारत में मतदान का पेटर्न उलझे हुये प्रश्न के उत्तर जैसा है। प्रारम्भ में चुनाव का पेटर्न कांग्रेस बनाम अन्य पार्टियाँ थीं। वर्तमान में अब यह पेटर्न भाजपा बनाम शेष अन्य पार्टियाँ हैं। नये भारत का जन्म राजनीति के आंगन में हुआ। जहाँ गणतंत्र है वहाँ एक दूसरे के विरुद्ध विचारधारा की पार्टी होंगी ही। जिस पार्टी की सरकार है उसके कार्यकर्ता के हित रखने वाले व्यक्ति कमिटेड मतदाता होते हैं। यह माना जाता है, ऐसे लोगों ने पार्टी के पक्ष में मतदान किया ही होगा।

प्रत्येक व्यक्ति अपेक्षा करता है कि उसके देश की सरकार, विकास के प्रति कर्तव्य निष्ठ रहे। अतः नये मतदाता, पार्टी इन पावर का साथ देते हैं। कुछ मतदाता समय की बचत के साथ चलते हैं। देश की महिलाओं का मत भी विकास के साथ रहता है। अनुच्छेद 370 की समाप्ति, तीन तलाक से मुक्ति ने मुस्लिम महिलाओं को मतदान के लिये प्रेरित किया है और राम मंदिर ने हिन्दू महिलाओं को मतदान की कीमत समझी है।

सन 2024 का यह चुनाव मोदी के सबल नेतृत्व में एनडीए संग भाजपा तथा कांग्रेस संग झण्डिया के मध्य लड़ा जा रहा है। एक ओर विश्व के नेताओं के नेता पीएम मोदी ने चुनाव की भागद्वार संभाल रखी है तो दूसरी ओर विचारधारा अछूट संसद राहुल के कांग्रेस के बीच लड़ा जा रहा है। एक ओर देश को तीसरी बड़ी आर्थिक शक्ति बनाने का है तो दूसरी ओर लाड़खड़ाते हुये नेतृत्व विहीन पार्टी चुनाव के मैदान में है। भारत की चारों दिशाओं में अब की बार मोदी सरकार व 400 पार के नारे बुलन्द आवाज में सुनाई दे रहे हैं तो दूसरी ओर विपक्ष को 300 सीटों पर लड़ने वाले उम्मीदवार भी नहीं मिल पा रहे हैं। बनावटी पोल के नतीजे भी चुनाव के रिजल्ट 370 के आस पास दिखा रहे हैं।

दिनांक 19.04.2024 को प्रथम चरण के चुनाव पूरे हुये और देर तक यह समाचार मिला कि औसत मतदान कम हुआ है। राजनैतिक गलियारों में कुछ देर के लिये सन्नाटा छा गया। विचारों का द्रन्द प्रारम्भ हो गया। दिनांक 19.04.2024 के बाद चुनाव आयोग का चुनावों का विस्तार से विश्लेषण मिला। यदि हम राजस्थान की 12 संसद की सीटों के बूथ वाईज मतदान को देखेंगे तो

भारत में मतदान का पेटर्न उलझे हुये प्रश्न के उत्तर जैसा है। प्रारम्भ में चुनाव का पेटर्न कांग्रेस बनाम अन्य पार्टियाँ थीं। वर्तमान में अब यह पेटर्न भाजपा बनाम शेष अन्य पार्टियाँ हैं। नये भारत का जन्म राजनीति के आंगन में हुआ। जहाँ गणतंत्र है वहाँ एक दूसरे के विरुद्ध विचारधारा की पार्टी होंगी ही।

2024 में औसत मतदान 57.6 प्रतिशत है। लक्षदीप में 2019 में 85.1 प्रतिशत था और 2024 में मामूली सी कमी आंकी गई है, वहाँ औसत 2024 में 84.1 प्रतिशत आया है। उत्तराखण्ड में 2019 में 61.5 प्रतिशत तो 2024 में 57.2 प्रतिशत पाया गया है। आन्ध्रप्रदेश, तामिलनाडु, महाराष्ट्र में मतदान में काफी कम है। इलेक्शन कमीशन इस कमी पर निकाह लगाये हुये है और इसे ब्यूट करने की योजना दूसरे चरण में करने का रहा है। आज 26.4.2024 है, यानी दूसरे चरण का मतदान है। ऐसा मामूल हुआ है कि मतदान के समय मुख्य बाजार बंद रहेंगे।

कम वोटिंग के कई कारण हैं। अलग-अलग प्रदेशों में भी ये कारण भिन्न हो सकते हैं, किन्तु इस सच को स्वीकार नहीं किया जा सकता कि कम मतदान का अर्थ है, मतदाता का लोकतंत्र में विश्वास कम होना है।

पहले चरण में भी धोखे में आया है कि जहाँ भाजपा का असर है वहाँ मतदान कम हुआ है किन्तु जहाँ भाजपा का प्रभाव नागण्य है वहाँ मतदान बम्पर भी हुआ है।

प्रथम चरण में मतदान की कमी का कारण कुछ चुनाव विशेषज्ञ यह मानते हैं कि भाजपा यह मान बैठी थी कि उनकी जीत सुनिश्चित है, और कांग्रेस के कार्यकर्ता हार के भय से निराश हो गये थे। हार निश्चित है, फिर मतदान कराने का नाटक क्यों किया जावे? मतदान के समय कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने मतदाताओं को घर से बूथ तक लाने का प्रयत्न नहीं के बराबर किया जबकि भाजपा कार्यकर्ता भी एक सीमा तक आशावाचक होने से पूर्ण सजग नहीं रहे।

एक चुनाव विशेषज्ञ का विचार लेखक को सारगर्भित लगा। उनका कहना था कि कांग्रेस अपनी सन्तानों को सैट करना चाहती है, वहाँ मोदी सभी लोगों की सेवा में खड़ा है।

चुनावों में एक बात मूल रूप से देखी जा रही है कि ऐसे वाले व बुद्धि वाले मत देने बूथ तक नहीं जाते। मतदान में झुग्गी-झोंपड़ी के मतदाताओं की संख्या अधिक रहती है। अतः मतदान अनिवार्य Compulsory होना चाहिये। प्रत्येक मतदाता का कर्तव्य है कि वह मतदान धर्म व कर्म समझकर करे।

पहले चरण के चुनाव में यह देखा गया है सभी पार्टियाँ भीतरी घात से प्रभावित है। एक व्यक्ति वर्षों तक अपनी पार्टी के नेताओं की सेवा करता रहा और जब उसका हक परिपक्व हुआ तो दूसरी पार्टी के व्यक्ति को जो पार्टी छोड़कर आया है उसे टिकिट दे दिया जाता है। इन परिस्थितियों में भीतरी घात का होना स्वाभाविक ही माना जाना चाहिये। जब तक कोई व्यक्ति लगातार 5 वर्षों तक एक राजनैतिक पार्टी का सदस्य नहीं रहता उसे पार्टी चुनाव के हेतु टिकिट न दिया जावे। 'आथा राम गया राम' का सिद्धान्त नैतिक नहीं है।

मतदान का अधिकार संवैधानिक अधिकार है अतः न तो यह बेचा जा सकता है न खरीदा ही जा सकता है। संविधान के अनुसार मतदाता और चुनाव में खड़ा होने वाला वही व्यक्ति होना चाहिये जो संविधान के अनुच्छेद 51 के तहत अपने मूल कर्तव्यों की पालना कर रहा हो। देश की संसद का समस्त कार्य संविधान के अनुसार होना चाहिये, अतः आवश्यक है वह संविधान की जानकारी रखने वाला हो। वह कानून बनाता है, अतएव वह पढ़ा-लिखा होना चाहिये। यह सुझाव कई बार दिया जा चुका है कि सांसद/विधायक बनने के लिये ग्रेजुएट होना कानून में आवश्यक किया जावे। जो व्यक्ति अनुच्छेद 51 के कर्तव्यों की पालना करने में बार-बार चूक कर रहा हो उसे चुनाव में खड़ा होने के योग्य नहीं माना जावे।

हमारा चुनाव का कानून The Representation of People Act, 1951 बहुत पुराना हो चुका है। समय के साथ वह पिछड़ चुका है। उसमें बहुत सुधारों की आवश्यकता है। अतः सम्पूर्ण रूप से नया कानून लाना आवश्यक हो गया है। नया कानून शीघ्र से शीघ्र लाया जावे। संविधान में भी इस हेतु आवश्यक संशोधन हो। चुनावों में राजनीतिक पार्टियों को चंदा कहां से और कैसे प्राप्त हो यह पारदर्शित होना चाहिये। उम्मीदवार अधिक से अधिक कितना खर्चा चुनाव पर खर्च कर सकता है, इसकी सीमा निर्धारित होनी चाहिये और पालना आवश्यक हो। देश में संसद व विधान सभा, नगरपालिका अथवा पंचायत के चुनाव एक साथ हो, विकासशील क्षेत्रों के लिये एक देश एक चुनाव आवश्यक है। सन 1952 से प्रारम्भ होने वाले चुनावों का स्तर धीरे-धीरे गिरता जा रहा है। नेताओं को जबान विषैली हो गई है यह सच है संविधान ने हमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी है, किन्तु जिस भाषा का हम चुनावों में प्रयोग कर रहे हैं वह उस देश की भाषा नहीं हो सकती, जिस देश में गंगा बहती है।

प्रश्न लेख में यही उठाया गया था कि प्रथम चरण के चुनाव में मतदान औसत से कम क्यों हुआ? इसका सीधा, सरल व उचित उत्तर है भारतीय जनता पार्टी के नेताओं व कार्यकर्ताओं का जीत के प्रति अति उत्साहित होना कि हमारी जीत तो निश्चित है। कांग्रेस के नेताओं व कार्यकर्ताओं में निराशा की भावना व्याप्त होना कि वे तो हारेंगे ही फिर मेहनत क्यों की जावे? परिणाम यह हुआ कि मतदाता जिस संख्या में मतदान करते वे पोलिंग बूथ तक पहुंच ही नहीं सके। मतदान कम हुआ। मतदान में कमी लोकतंत्र में विश्वास की कमी को प्रदर्शित नहीं करता। मतदान का सिद्धान्त है कि सत्ता बरकरार रहने के माहौल के कारण मतदान में कमी आती है और बदलाव के लिये ज्यादा मतदान होता है।

-अतिथि सम्पादक, पानाचन्द जैन पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट



डॉ. अरुणा व्यास

यह समय पक्षियों के लिए संकट का है। खासकर से गैरिया के लिए तेजी से बदलते शहर और वहाँ बनने वाले आवास अब घरेलू गैरिया के लिए उपयुक्त नहीं रहे हुए हैं। गैरिया मानव के लिए बेहद लाभकारी है। पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने और घातक कीटों को खारक अपना जीवन यापन करने वाले इस पक्षी के नहीं रहने का अर्थ है, मानव सभ्यता पर ही संकटा असल में अब जो घर बन रहे हैं, वह इस तरह से बन रहे हैं कि वहाँ गैरिया के घोंसले के लिए जगह नहीं होती। माइक्रोवेव टायरो और कीटनाशकों के कारण होने वाले प्रदूषण से घरेलू गैरिया की पूरी की पूरी प्रजाति संकट में है। गैरिया ही क्यों दूसरे पक्षी भी अब बहुत कम दिखने को मिलते हैं। सोचिए, ऐसा ही यदि होता रहा तो आने वाले समय में पक्षियों के गैर ही हमें रहना होगा और इसका अर्थ है, स्वयं हमारे ही अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न!

हमारी संस्कृति में कहा गया है पक्षियों को दाना-पानी देने से भविष्य के अमिष्ठ से स्वयंमेव छुटकारा मिल जाता है। यह भी कि हजार मनुष्यों के बजाए हजार मूक जीवों को भोजन करना अधिक पुण्य का कार्य है। यह समय भीषण गर्मी का है, गैरिया और दूसरे

पक्षियों के लिए दाना-पानी की बड़ी समस्या इस समय रहती है। इस दृष्टि से पाली में बहुत महती काम किया है, समाजसेवी नेमीचंद चौपड़ा ने नेमीचंद चौपड़ा मूलतः व्यवसायी हैं परन्तु पिछले एक दशक से पक्षियों को बचाने की मुहिम में लगे हैं। उनकी इस मुहिम का आधार है, पक्षियों के लिए घर बनाकर उन्हें बसाना। आरंभ में गैरिया को बचाने के लिए उन्होंने ऐसा किया पर अब वह जो घर पक्षियों के लिए बनाते हैं, उनमें सब-तरह के पक्षी, कबूतर अपना आवास करते हैं और वहाँ दाना-पानी की उनकी पूर्ति भी हो जाती है। नेमीचंद चौपड़ा ने पाली में विशेष रूप से पक्षी-घर बनाए हैं। आमतौर पर पक्षियों के लिए पेटु ही बसेरा होता है। गैरिया के लिए लोगों के घर भी बसेरा होते हैं परन्तु बदलती जीवन शैली में गैरिया को घर कौन दे? कौन उसे अपने यहां घोंसला बनाते दे? इसलिए उनके यह घर भी अब दूर की सोच हो गए हैं। और फिर जैसे-जैसे केन्द्रो के जंगल में यह सारा संसार तब्दील होता जा रहा है, पक्षियों और जानवरों के लिए रहने के ठिकाने छीनते जा रहे हैं।

पक्षी कहां जाए? कैसे उनको भोजन मिले? कैसे वे स्वान और दूसरे जानवरों के शिकार होने से बचे रहें? इन्हीं प्रश्नों से जुड़ते भासाशाह नेमीचंद चौपड़ा ने पक्षियों के लिए घर बनाने के विचार को मूर्त रूप दिया। पक्षी प्रायः तिनका-तिनका एकज किए अपने घोंसलों में ही रहना पसंद करते हैं, पर शहरों में इमारतों के फलते जंगल में तिनके कहां से आए? इसी सोच से नेमीचंद चौपड़ा ने पक्षियों के रहने के लिए ही बहुमंजिला आवास की पहल की। इसके लिए बाकायदा पक्षियों के लिए मीसम को अनुकूलता को ध्यान में रखते हुए घोंसला रूपी निर्माण कार्य आरंभ किया गया। पाली में



पक्षियों के लिए बहुत सुंदर घर बने हैं। बहुमंजिला इमारतों में मनुष्य ने पक्षी अपनी मर्जी से रहते हैं। पाली जाएंगे तो आपको नेमीचंद चौपड़ा के बनाए पक्षियों के लिए अनूठे ठिकाने देखने को मिलेंगे। यहां पक्षी घोंसलों के बजाय हमारी ही तरह फ्लैट में रहते हैं, वो भी हजारों की तादाद में। इन मूक परियों के लिए ऐसे फ्लैट बनाए गए हैं, जिनमें गर्मी के तेज ताप भी बेअसर है। बाकायदा इसके लिए गुजरात के कारीगरों को बुलाकर कार्य किया गया। गुजरात की मोरवी टाइल्स से इनका निर्माण किया गया है। यह गर्मी में ठंडी और सर्दी में गर्म रहती है। माने वातानुकूल है। नेमीचंद चौपड़ा बताते हैं, इसके लिए गुजरात गया था। वहां देखा 12 फुट का पक्षीघर किसी ने बनाया था। मैंने यह जो पाली में बनाया है वह 72 फुट का है। यहां तुफान आया पर कुछ नहीं हुआ। इस पक्षीघर में करीब 3000 पक्षियों के घोंसले हैं, जो देखने में भी

काफी सुंदर लगते हैं। नेमीचंद चौपड़ा ने पाली ही नहीं, जिले के दूसरे गांव-कस्बों में भी ऐसे ही फ्लैट पक्षियों के लिए बनाए हैं। उद्देश्य यही है कि पक्षी सुकून से वहां रह सके। पाली शहर के तीन ओर से पानी से घिरे लाकुरिया उद्यान में उन्होंने आरंभ में ऐसे ही दो पक्षीघर बनाए हैं। शहरवासी यहां उद्यान में घूमने आते हैं और पक्षियों के लिए दाना-पानी डालते हैं। इससे पक्षियों को फ्लैट से बाहर आने तक की जरूरत नहीं होती है। इससे पक्षियों के मरने के आंकड़ों में भी कमी आयेगी है। पक्षियों के अपने घर है। इसलिए उन्हें श्वान का डर नहीं है। इतनी ऊंचाई पर है कि वहां श्वान पहुंच नहीं सकते। बरसात व अंधड़ के समय भी पक्षी सुरक्षित रहते हैं। नेमीचंद चौपड़ा ने पाली के साथ ही सोजतरा, निमाज और जैतारण सहित अन्य इलाकों में भी पक्षियों के लिए ऐसे ही पक्के पक्षीघर बनाए हैं। नेमीचंद उदार व्यवसायी हैं। पक्षीघर के बाद अब शहर में तोता घर

का निर्माण करवाने का भी उनका विचार है। वह कहते हैं, तोतों के लिए अलग से पक्के घर का निर्माण करवाया जाएगा। इनकी हूपेखा तैयार कर ली गई है। पाली हाइवे पर नेमीचंद चौपड़ा ने प्रख्यात संत रूप मुनि जी की स्मृति में भव्य जैन मंदिर और साधु-संतों के समागम के लिए विश्राम गृह का निर्माण भी किया है। वह चाहते हैं, श्रमण संस्कृति के आलोक में जैन धर्म से जुड़े इतिहास और संस्कृति का एक विशाल पुस्तकालय भी रूप-मुनि की स्मृति में स्थापित करें। इसके लिए भी उन्होंने सुनियोजित कार्य योजना के तहत पहल की है। उद्देश्य यही है कि इस पुस्तकालय के साथ जैन धर्म से जुड़ी भारतीय संस्कृति के मौलिक शोध और अनुसंधान को गति दी जा सके।

डॉ. अरुणा व्यास, पत्रकार एवं लोक-संस्कृति मर्मज्ञ

अधूरा सड़क निर्माण ग्रामीणों के लिये परेशानी का सबब बना

पावटा, (निसं)। अधूरा सड़क निर्माण कार्य ग्रामीणों के लिये परेशानी का कारण बना हुआ है। इस समस्या का समाधान नहीं होने पर ग्रामीणों ने आंदोलन की चेतावनी दी है।

जानकारी के अनुसार विराटनगर विधानसभा क्षेत्र में पावटा से कुनेड तक 2.5 करोड़ की लागत से 2 कि.मी. लंबी व 30 फुट चौड़ी सड़क प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत बननी थी। इसकी टेंडर प्रक्रिया पूरी होने के बाद ठेकेदार ने इस पर करीब एक महिने देर से काम शुरू कर दिया था और लगभग सड़क निर्माण के तहत मोहम्मद डालकर सीसी के लिए पक्का भी कर दिया गया लेकिन पावटा, कुनेड, भोनावास सहित दर्जन भर गांवों व ढाणियों को जोड़ती सड़क का नवीनीकरण कार्य अधूरा पड़ा है। ग्रामीणों ने बताया कि पीडब्ल्यूडी विभाग और ठेकेदार की सड़क निर्माण को लेकर लापरवाही है। यहां दो किलोमीटर तक सड़क नवीनीकरण



पावटा से कुनेड तक सड़क का नवीनीकरण कार्य अधूरा पड़ा है।

कार्य पिछले कई महिनों से अधूरा पड़ा है। पुरानी डामरीकरण सड़क को उधेड़कर छोड़ने से आवागमन में लोगों को भारी परेशानी हो रही है। आए दिन हादसों की आशंका बनी रहती है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत

सड़क सुदहीकरण कार्य प्रारंभ 16 जुलाई 2023 को होना था व कार्य समाप्त की अवधि 16 दिसंबर 2023 को पूरी हो गई। इसके काफी समय बाद ठेकेदार ने सड़क का निर्माण कार्य चालू किया है। जिसके चलते

आए दिन सड़क हादसे हो रहे हैं और वाहन चालकों के लिए खूदी सड़क परेशानी का सबब बनती जा रही है। सड़क कार्य के कछुआ चाल को लेकर लोगों में गहरा आक्रोश है। वहीं हंसराज टेलर, पुनीत लुधरा,

समस्या समाधान नहीं होने पर ग्रामीणों ने आंदोलन की चेतावनी दी

धर्मेश शर्मा, सुशील गौड़, जितेंद्र वर्मा, रामचंद्र, विजय, दीपक सहित ग्रामीणों ने बताया कि उक्त सड़क कार्य स्वीकृत करवाया गया जिसमें लोगों को राहत मिल सके, लेकिन अधिकारियों की अनदेखी के चलते यह रोड आम जनता के लिए आफत बन गई है। ढाई माह से अधिक समय बीतने के बाद भी कार्य अधूरा पड़ा है। जिसके चलते उक्त मार्ग लोगों के लिए आफत बन चुका है। ऐसे में लोगों को सरकार की जन कल्याणकारी योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा है। वहीं ग्रामीणों द्वारा अधिकारियों से लेकर जनप्रतिनिधियों को अवगत करवाने के बाद भी समस्या का समाधान नहीं हुआ है, इसलिए ग्रामीणों ने आंदोलन की चेतावनी दी है।

मजदूर पिता के बेटे ने यू.पी.एस.सी. परीक्षा पास की

बीकानेर, (निसं)। मजदूर के बेटे ने 10 साल की अथक मेहनत और लगन के बाद देश की सबसे कठिन परीक्षाओं में से एक यूपीएससी में सफलता हासिल कर न सिर्फ अपने गांव और समाज का नाम रोशन किया है, बल्कि अपने पिता को भी धूप में झुलसने से राहत दिलाई है।

बीकानेर निवासी अशोक सोनी ने यूपीएससी में चयन के बाद अपने

पिता को बताया कि उसका यूपीएससी परीक्षा में चयन हुआ है, पिता उस समय मजदूरी कर रहे थे। बेटे ने कहा कि पापा, आपके बेटे का चयन यूपीएससी में हो गया है। ऐसे में मजदूर पिता को इस बात की जानकारी नहीं थी कि बेटा किस परीक्षा में चयन की बात कर रहा है। उन्होंने क्या, बेटा, मैं अभी सीमेंट मिला रहा हूँ, बाद में बात करना। कुछ ऐसा ही है अशोक

सोनी के परिवार के साथ, जिनका हाल ही में यूपीएससी में चयन हुआ है। सोनी ने परीक्षा में 793वीं रैंक प्राप्त की, उन्हें अपने पांचवें प्रयास में सफलता मिली। अशोक सोनी जो इन दिनों दिल्ली में रह रहे हैं। उनके पिता बीकानेर में अपने पैतृक गांव में एक मजदूर के रूप में काम करते हैं। इसी बीच जब बेटे ने अपने पिता को फोन किया तो पिता ने कहा कि मैं अभी

सीमेंट मिला रहा हूँ, बाद में बात करना। इसी बीच अशोक का जवाब आया कि "पापा थारो छोरो आवएएस बांग्यो है"।

अशोक ने बताया कि वह पिछले 10 साल से तैयारी कर रहा है। अब उनका चयन हुआ है। हालांकि, अभी यह तथ्य नहीं है कि उन्हें कौन सा कैडर मिलने वाला है। लेकिन वह अपने पिता सीताराम और मां सरला की

जीवन परिस्थितियों को जबरन बदल देंगे। अशोक का कहना है कि उन्होंने 2013 से 2023 तक हुई सभी परीक्षाओं के पेपर इकट्ठा किए और उसके आधार पर तैयारी शुरू की और अब उन्हें यह सफलता मिली है। अशोक बताते हैं कि परिवार को अधिक से अधिक खुशियाँ देने के लिए जीवन में हमेशा कड़ी मेहनत करनी चाहिये।

राशिफल शुक्रवार 26 अप्रैल, 2024



पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत् 2081, अनुप्रभा नक्षत्र रात्रि 3:40 तक, वारियान योग रात्रि 4:14 तक, गर करण प्रातः 7:47 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेघ, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-मीन, बुध-मीन, गुरु-मेघ, शुक्र-मेघ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज राजयोग सूर्योदय से रात्रि 3:40 तक है। सर्वोत्तम तिथि योग रात्रि 3:40 तक रहेगा। भद्रा रात्रि 8:3 से आरम्भ होगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 7:33 तक, लाभ-अमृत 7:33 से 10:48 तक, शुभ 12:25 से 2:02 तक, चर 5:56 से सूर्यास्त तक।

राहुकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 5:56, सूर्यास्त 6:53

मेष
पारिवारिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। आवश्यक कार्यों में व्ययधान उतपन्न हो सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

वृष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। पारिवारिक-व्यक्तिकार्यों के लिए यात्रा संभव है।

मिथुन
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कर्क
परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है। आवश्यक और महत्वपूर्ण मामलों में बुविधा बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में आपसी अनबन हो सकती है। अर्णल कार्यों में समय खराब हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा।

कन्या
आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। पारिवारिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी।

तुला
आर्थिक कार्यों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बरतें लोगों। संभावित खेत से धन प्राप्त होगा। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चन दूर होने लगेगी। व्यावसायिक विवादों का निपटारा हो सकता है। नौकरपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

धनु
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। शुभ-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। मन में असंतोष बना रहेगा।

मकर
आर्थिक वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

कुम्भ
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होगा।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटके हुए कार्य बरतें लोगों। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।